YOUNG RESEARCHER
ISSN: 2277-7911Impact Factor: 5.077 (SJIF 2021)
Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal
Volume - 12, Issue - I, Jan-Feb-March 2023

किशोरावस्था में "व्यक्तित्व के सभी आयामों का विश्लेषण"

डॉ. कुमार अमित

Ph.D. (Education), दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास.

***Corresponding Author:** डॉ. कुमार अमित*

DOI - 10.5281/zenodo.8387129

सारंश:

किशोरावस्था जनुमोपरांत मानव विकास की तृतीय अवस्था है, इस अवस्था मे होने वाले शारीरिक मानसिक, समाजिक एवं संवेगात्मक परिवर्तनों को व्यक्तिगत विकास की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। इस अवस्था में बालक परिपक्वता की ओर अग्रसर होता है, तथा उसकी सुमारित पर वह पूर्ण परिपक्त व्यक्ति बन जाता है। किशोरावस्था को हॉल ने संघर्ष, तनाव, तुफान की अवस्था कहा जाता है। संवेगात्मक उथल-पुथल तथा तनाव की अवस्था होने के कारण कुछ मनोवैज्ञानिक इस समस्यात्मक अवस्था भी कहते है। अंत: शैक्षिक दृष्टि से भी किशोरावस्था को अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। इस अवस्था में किशोरो को उचित मार्गदर्शन की अवश्यकता होती है। ताकि वांछित दिशा मे प्रगति के उनकी सम्भावनाओ को बढ़ाया जा सके।

किशोरों के भावी जीवन के निर्माण की दृष्टि से माता - पिता अध्यापक तथा समाज का यह कर्तव्य हो जाता है कि इस अवस्था मे उनके लिए उपयुक्त एवं सुनियोजित शिक्षा की व्यवस्था का करे।

परिचय:

किशोरावस्था संवेगात्मक संघर्ष की अवस्था होती है। किशोरों के जीवन मे लगातार संवेगात्मक उथल-पुथल, होता रहता है। शिक्षा के द्वारा किशोरों के निकृष्ट एवं दुखद संवगा की दबानें अथवा मार्गान्तरीकरण करने तथा उत्तम संवेगों का विकास करने का प्रयास किया जाता है।

किशोरावस्था को विकास, का काल कहा जाता है। क्योंकि इस अवस्थी में बालक व्यक्तित्व के सभी आयामों, शारीरिक, मानसिक, समाजिक, संवेगात्मक, नैतिक, यौन तथा भाषागत विकास में अपनी ऊँचाइयाँ को छूने का प्रयत्न करता है। इस प्रकार विकास जहाँ बालक को सभी प्रकार की परिपक्वता ग्रहण करने में मदद करता है। वही इस प्रकार की तीव्र बदलात का अकस्मात शिकार होने से उनके लिए विभिन्न प्रकार की समायोजन, सम्बन्धी समस्याएँ भी खड़ी कर देता है। जिसका समाधन शिक्षा के माध्यम से किया जाता है।

चित्रण व विवरण:

सामूहिक क्रियाएँ सामूहिक खेलकुद, स्काउटिंग, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि किशोरों मे

उत्तम सामाजिक व्यवहार तथा सामाजिक सम्बन्धे के विकसित करने की दिशा में उपयोगी होता है । विद्यालय एवं परिवार द्वारा दिया जाने वाली नैतिक एवं धार्मिक शिक्षा के द्वारा किभोरों मे धर्मिक एवं नैतिक विकास होता है। शैक्षिक दृष्टीकोण से किशोरावस्था काफी महत्वपूर्ण होती है। इस अवस्था में किशोर अपने जीवन की महत्वपूर्ण शैक्षिक गतिविधियों को पूरा करता है । शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर उनके सामने विभिन्न प्रकार की समस्याएँ उपस्थित होती है । पाठ्य से संबंधित, विषय से संबंधित, शैक्षिक एवं व्यवसायिक सूचनाओं से संबंधित इत्यादि । अंत: शिक्षा के उचित विकास के लिए किशोरों को इन समस्याओं का समाधान कह उचित समायोजन की अवश्यकता होती है, जिससे उनका सकारात्मक शैक्षिक विकास हो सके।

किभोरावस्था मे मानसिक विकास अपनी उच्चतम सीमा पर पहुंचने लगता है। उनमे विचारने, तर्क सोचने, कल्पना करने तथा निरीक्षण, अवलोकन, परीक्षण प्रयोग आदि के द्वारा उचित निष्कर्ष निकालने की पर्याप्त क्षमता विकसित हो जाती है। समस्या का उचित समाधान नही मिलने पर उनका मानसिक समायोजन नही हो पाता। फलत: उनमें नकारात्मक एवं विध्वसात्मक प्राकृति का विकास होता है।

किशोरावस्था मे होने वाले अनुभवों तथा बदलते सामाजिक संबंधो के फलस्वरूप किशोर - किशोरियां नए-नए ढंग से सामाजिक वातावरण में समायोजित होने का प्रयास करते है । अंत: शिक्षा द्वारा उन्हे समाजिक समायोजन मे सहायता मिलती है।

शिक्षा जगत मे परिवार शिक्षा के अनौपचारिक सादन के रूप में प्राथमिक पाठशाला का स्थान उसी समय से ग्रहण करता चला आ रहा है, जब से संसार मे मानव 'जीवन' अस्तित्व की कल्पना की जा सकती हैं । बच्चो की शिक्षा की शुरुवात परिवार में ही होता है, परिवार मे माता अपने बालक की शिक्षा की प्रथम स्तोत्र होती है। माता - रूपी गुरु के द्वारा प्रेमपूर्वक प्राप्त की हुई शिक्षा को बालक कभी नही भूलता है। यही कारण है कि रूसो ने परिवार के महत्व पर बल देते हुए लिखा है कि शिक्षा जन्म से प्रारंभ होती है तथा माता उपयुक्त परिचारिका है ।

आज सम्पूर्ण विश्व इस बात से सहमत है कि बच्चों के शिक्षण मे माता, पिता एवं विद्यालय की धानात्मक भागीदारी उनके लिए प्रेरणादायक तत्व के रूपों में काम करती है। किशोरावस्था बच्चों के स्कूल की शैक्षिक एवं अन्य गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी निभातें है ।

निष्कर्ष:

किशोरावस्था मे किशोर तथा किभोरियों को कई समान्य समस्याओं का सामना करना होता है। ऐसे तो किशोरों में शारीरिक विचलन एवं शारीरिक दोष जैसे दाँत, दृष्टि एवं श्रवण की समस्या तो आम होती है। परन्तु इससे हटकर भी कुछ समस्याएँ है जो शारीरिक तथा मानसिक विकास के कारण उत्पन्न होती है। किशोर व्यक्तित्त के विभिन्न क्षेत्रों मे आये परिर्वतनों के कारण उनमें समायोजन सम्बन्धी समस्या हो जाती है। किशोरो को विभिन्न क्षेत्रों मे सफलता दिखलाने की तीव्र इच्छा होती है। वे बहुत कुछ स्वंय करने मे सक्षम होते है और इन्हे इस सिलसिले में किसी की जरूरत नही होती है। अत: इन्हें इन क्षेत्रों में समायोजन से सम्बन्धित कुछ समस्याओं का समाना करना पड़ता है।

पियाजे महोदय के अनुसार कि किशोरावस्था में बालकों का संज्ञानात्मक विकास एक नया रूप अपनाता है। इनके अनुसार किशोरावस्था से ही संज्ञानात्मक विकास की एक विशेष अवस्था प्रारंभ होती है। जिसे औपचारिक परिचालन की अवस्था कहा जाता है। बालक इस अवस्था में किसी समस्या का समाधान करने मे उस समस्या के सभी पहलुओं की परख कर सकता है, सभी संभवित समाधानों को मन मे एकत्रित करता है तथा किसी वस्तु के सभी तरह के गुणौ के बीच संबंधौ की जॉच भी करता है। किसी समस्या के समाधान म बालक क्रम निगमनात्मक चिन्तक करता है। क्योंकि इसमें समस्या के सभी संभावित सामाधान होते है बालक के सभी अनुपयुक्त समाधानों छाटते हुए एक अन्तिम वैज्ञानिक निष्कर्ष पर पहुँचता है। किशोरों मे औपचारिक परिचालन का गुण बहुत हद तक उनके शैक्षिक स्तर द्वारा प्रभावित होता है।

सन्दर्भ:

- Eccles, J S Harold R D (1983), Parent School Involvement during early adolescent year. Teach coll. Rec 94: 568-581
- Furstenberg F, Hughes M. (1995), Social capital and successful Development Among At- Risk Youth. J. Marriage, fam-5: 580-592
- Elder Gygr, Van Nguyen T. Capi, F (1985), Quoted by C.A. Flanagan and J.S. Eccles, In Changes in parent's work status and Adolescents.